

मिनावलिथ

आभा मंदिराथ

1274

ASTA ... GIVES

रक्षागुच्छकालेनमः॥ अथगुच्छकालीमरागिवावलिलि
 स्थग ॥ अन्नैसमीनयल्लेसस वासवमववा गङ्गुहीवा
 वलिंदयाग किंवास्या रायिग कुमेश ॥ यूनायभादिनिः
 वम्यगृहीत्वा वैदुविधि ॥ वयुयथवाका कान यगागु
 कृतिवागिवा ॥ असाक्षसः खनयानिऊनः सारुसक
 दृगः ॥ निशीथवाययाम वागृत्वावनसैरुगि ॥ भव

मम नहि मखाग कृमी नीरु त्वा समाहि नः॥ सकल
सामयांगृहीत्वा दध्मदायमावा वडयथेवा वनवा
माह कायी (०) वा मम नवा मिवायगाग कृनि नगग
त्वा वलिष्ठु राधु रु यनि दार्थ वलिंदयागु॥ ननु कमा
यथा॥ सामागीरु मो सं स्काय यून नः ४ गुध का ल्य नः

रु १
ज्ञाया वधु न॥ गुध कालि महा नाव सुष्ठि स्ति यं का
लिनि। अ नू ज्ञां दहि म द विषु दा स्या मिनि वा वलिं॥
ॐ ह्य नू ज्ञा मा दा य॥ ॥ द द या नि ना जलं गृहीत्वा
मनु मूचा य वलि मूत्मु ज न॥ मनु ४॥ डं डी थो डं गुः
ध कालि कार्य महा धान ना वा ये रु ग मा लि न्य नि वा

ॐ मि नो काला मालि नो हृदय मं वलि यय का मि गृह
रु रु कय र सव सि द्वि क नूर म म ग क ना स य र भू
युगि क्म वि र्व स य र म थ र कु द य र ना र्ज नारु य
कु र्वे ग क म द य र रु सै स्मी क नूर वि डा व य र
रु र न र वि क्षा रु य र म द य र या ग य र द वी स व

सर्व रु ग रु ग क र्य क लि सर्व ना ग य स म नि सर्व सि
द्वि पु दा य नी काल र हृ रु द र्ज य र च रु या ग र्व मि
व क का या लि नि र्वे ३ कौ ३ दू ३ ना र्ज भ द हि र का
य य र कि लि र वा म द (रु य य (रु हि लि र म म स वी
री र्क भान य र सै रा वि ति सा मा हि नि र क ल क ल कि
नि र दू ३ रु र र त्वा रा ॥ मूल म क वि यी ज लि ॥ ॥

रुगे श्याचि सहा नरुनं कृणुयात् वदक गकिनी ॥
 माह कावलि दशा गुण आवाहन ॥ धूप दीप ॥ जा
 य ॥ स्नान ॥ भिवा नूय धन द विगु द्ध कालिन भासु
 ग ॥ उक्ता मुखिल लङ्कि के सीम नाव नृ गाल नि ॥
 मम न वा नि नी युग मव मा स यि न द्य ॥ म न मे
 बालि निव रु हा कै ज व क यि नी ॥ न भा सु ग म हा
 कै

(७५)

1.274

ASHA ARCHIVES

महामाया जगतानिर्मा कालिका। मार्गगा कृष्ण कनोदि
 वलुनयनभासुगे ॥ सर्वसिद्धियुदधान रुय कलिरु
 यावरु ॥ यस्य नारु वदवलि रुकने स्य मेम कालिके
 ॥ ससात्रगालि जय जय सर्वरुय कनि। वासु सुविः
 कनवेलु यामुता मुदं मालिनी ॥ ससात्र कानिना कृ
 वं सर्वसिद्धि युदायमी। दुर्गे किना न सत्रि धनासन
 ७२

गनेरुय ॥ मूनयद कनसदा रुय यामी विला कय
 । नाश्रयय कृ विकट विरु माय ४ सुनी क्रिय ॥ निवाः
 वलि विधानन यस्य ना रुवता लिकी। नमस्तु नमस्तु
 तु नमस्तु नमस्तु ॥ ॐ नि निवास्तु ॥ दलुवनय
 नम वापि वज कायालिनी विधिया। दलना गन्य कस्त
 मे नवयय मरु मरु ४ ॥ ॥ आगना स्या निवास्थाः

नमस्कृत्यान् ॥ ॐ निलिवालिद्यदानमनु ॥ १ ॥ नासायथन
मीकृणुनिवा आयानिवानवा आगनास्थानमकृत्याद
वीवर्धववानन ॥ निवा सूरय रुद्र नीषू हनषवलि
मा हवन् । क्रतु वृद्धक जग्निस्था माहकास्था वलिंद
यात् ॥ महदेव्यर्था माद्राणिनि ४८० वीदे हे यनि चत् ॥

अर्द्धतुल्यार्द्धसिद्धिर्न हाशुड. वियरुवर्ग। आगेनी
मडमदनै॥ अस्तु मयीच. त्रुदं अमर्वकवीर साधकः।
मिवावलित्रयीयाका महारुलयमादयः॥ ॥ ॐ मिम
हाकालसंहिता कृमिवावलि विधिः॥ ॥ संध्याकावर्णद्व
नरीजने यार्द्ध स्थाययित्वा डल्लु च आनन दद्यात्॥ निवद
निमहा माय निव कालाग्नि त्रयिनि। गुणगुन रु संध्याक

बृहस्पतिं नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 दुर्गा नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 सोमिषान्नद्युजो नमः ॥ ॥ तन्माममस्तु नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 दत्तात्रेय नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 श्य नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 रुद्र दत्तात्रेय नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 मोक्ष ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 निमनवान ॥ ॥